इकाई–1

भारत के विचार
IDEAS OF INDIA

1.1. एम. के. गाँधी (M.K.GANDHI)

1.1.1. जीवन वृत्त (Life Sketch)

गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को काठियावाड़, गुजरात प्रदेश के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था। महात्मा गाँधी के पिता का नाम करमचन्द गाँधी था, जो राजकोट में दीवान थे एवं इनकी माता का नाम पुतलीबाई था। वह धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। गाँधी जी की प्राथमिक शिक्षा काठियावाड़ से ही हुई तत्पश्चात् अल्फ्रेड हाईस्कूल, राजकोट से इन्होंने हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। बचपन से ही ये थोड़े संकोची, आज्ञाकारी स्वभाव के थे एवं सदैव बड़ों का मान–सम्मान करते थे। मैट्रिक के बाद आगे की शिक्षा भावनगर के शामलदास कॉलेज से पूरी की। गाँधी जी की आत्मकथा के अनुसार वे पढ़ाई–लिखाई में औसत थे। 13 वर्ष की अल्पायु में उनका विवाह कस्तूरबा गाँधी जी से हो गया। गाँधी जी ने 10 जून सन् 1891 ई. में इंग्लैण्ड से वकालत की परीक्षा पास की। अप्रैल सन् 1893 ई. को गाँधी जी कानूनी सलाहकार के रूप में दक्षिण अफ्रीका गए। अफ्रीका से वापस आने पर गाँधी जी ने विदेशी शासन का विरोध करते हुए स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

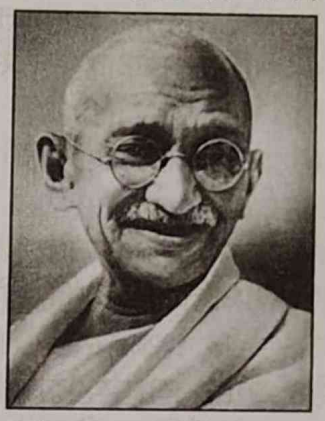

1921 में आपने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नेतृत्व किया तथा गरीबी के विरुद्ध लड़ने, महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने, धार्मिक तथा जातीय एकता स्थापित करने, अस्पृश्यता को समाप्त करने तथा स्वराज (स्व–शासन) प्राप्त करने के लिए अभियान प्रारम्भ किया। वे भारतीय ग्रामीण गरीबों के प्रतिनिधि के रूप में हाथ से बुने हुए सूत की छोटी धोती पहनते थे। सफलता सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने एक आत्मनिर्भर आवासीय समुदाय में रहना, सादा भोजन करना तथा लंबे समय तक उपवास रखना प्रारम्भ कर दिया। इससे आपको केवल आत्मनिरीक्षण में बल्कि राजनीतिक विरोध में भी सहायता मिली। मार्च 1930 में, आपने 400 किमी (250 मील) दांडी नमक मार्च के लिए कदम उठाया तथा साधारण भारतीयों के लिए उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रवाद लाए जिससे आपको अंग्रेजों द्वारा लगाए गए नमक कर का विरोध करने में सहायता मिली थी। आपने भारत छोड़ो आंदोलन प्रारम्भ करने में भी सहायता की थी। वह भारत के साथ–साथ दक्षिण अफ्रीका में भी कई बार जेल गए। सन् 1942 ई. में स्वतन्त्रता आन्दोलन ने फिर जोर पकड़ा जिसके परिणामस्वरूप गाँधी जी को जेल जाना पड़ा। इससे स्वतन्त्रता की आग और भड़क गयी जिससे विवश होकर अंग्रेजों ने 15 अगस्त 1947 ई. को भारत छोड़

दिया। भारत को आजादी तो मिल गयी, परन्तु इसके साथ ही देश का विभाजन गया और चारों तरफ साम्प्रदायिक झगड़े आरम्भ हो गए। गाँधी जी इन झगड़ों क करने का प्रयास किया। उनकी इस नीति से खिन्न होकर 30 जनवरी, सन् 1948 नाथूराम गोडसे नामक नौजवान ने गाँधी की गोली मारकर हत्या कर दी।

महात्मा गाँधी के अनुसार, "सच्ची शिक्षा वह है जो बालकों की आत्मिक, बौद्धि शारीरिक क्षमताओं को उनके अन्दर से बाहर प्रकट एवं उत्तेजित करती है।"

According to Mahatama Gandhi, "The true education is that which dra and stimulus the spiritual, intellectual and physical facilities of the children

1.1.2. गाँधीजी की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ (Important Wor Gandhi Ji)

गाँधीजी की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ इस प्रकार है–

1) सत्य के प्रयोग (1927)
2) हिंद स्वराज (1909)
3) मेरे सपनों का भारत (1942)
4) दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह (1920)
5) गीता बोध (1929)
6) ग्राम स्वराज

गाँधी जी एक समाजशास्त्री है अथवा नहीं यह एक विवादित प्रश्न है। साधारण माना जाता है कि गाँधी समाजशास्त्री नहीं थे। इस पक्ष पर दिए गए तर्क नि है–

1) गाँधी जी ने किसी सिद्धान्त के आधार पर नहीं बल्कि अपने जीवन एवं उ के बौद्धिक चिन्तन के आधार पर स्वयं के विचारों को प्रस्तुत किया है। उन विभिन्न लेखों, व्याख्यानों एवं उनकी आत्मकथा से स्पष्ट होते है। अतः उन को वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से प्रयोग सिद्ध माना जाए अ इस पर संदेह बना हुआ है।

2) सत्य तो यह है कि गाँधी जी के कार्यक्षेत्र एवं आदर्श मूल्यांकन–पद्धति थी। अतः उनके विचारों को समाजशास्त्रीय विचार न कह कर गाँधीवादी वि जा सकता है।

3) गाँधी जी समाजशास्त्रियों की तरह सिद्धांतवादी न हो कर व्यावहारिक एवं व्यक्ति थे एवं अपने विचारों की व्यावहारिकता को स्थिर रखने हेतु परिस्थि परिवर्तन के साथ साथ विचारों को भी परिवर्तित करते रहते थे। गाँ अनुसार "लोग कहते है कि मेरे विचार बदल गए है पर सच्ची बात तो परिस्थितियाँ बदल गयी है।" वह सत्यावादी थे अतः परिस्थिति के अनुसार सत्यता की जानकारी होती थी तो वह बता देते है। अतः इस कारण विचारों के माध्यम से कोई भी समाजशास्त्रीय सिद्धान्त विकसित नहीं हो प

4) गाँधीवादी विचारधारा का उद्देश्य वास्तव में सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर बल्कि उनका उद्देश्य रचनात्मक कार्यक्रमों को प्रस्तुत कर उसे सार्थक उदाहरण हेतु– बुनियादी शिक्षा की जिस योजना को उनके द्वारा रखा उद्देश्य श्रम एवं उत्पादन आधारित शिक्षा–पद्धति को लागू करके शिक्षित की समस्या को हल करना था। इसी प्रकार अस्पृश्यता विरोधी उनके